

# 许我一个奇迹

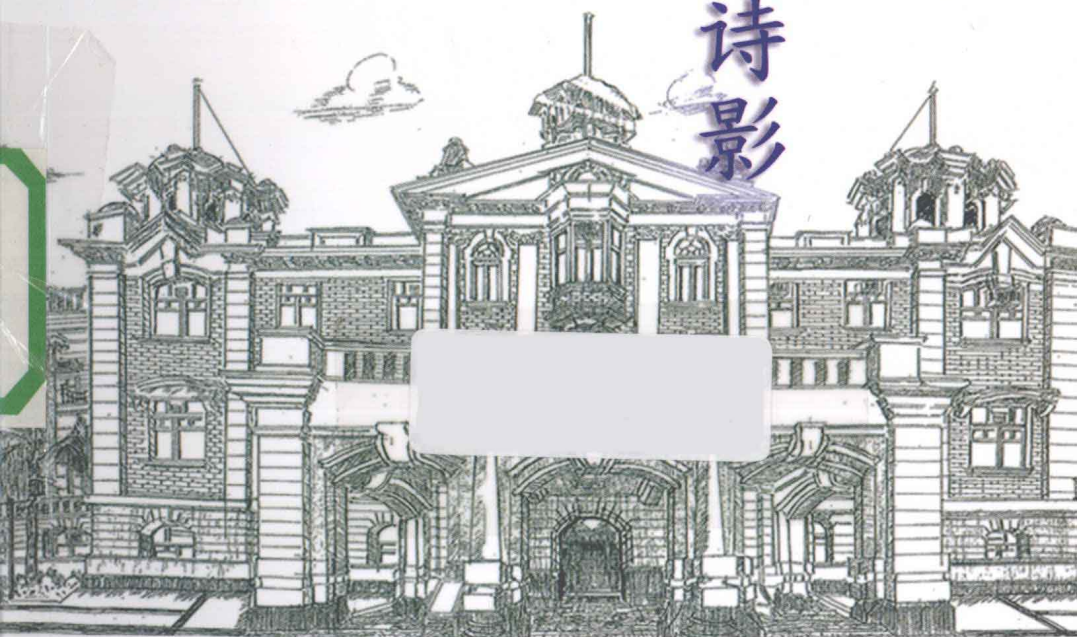
浩然波澜起伏  
天地何曾伟言？  
而下自成蹊！

动与静之间  
一股纵横气  
在宇宙驰骋……

看英雄儿女  
底蕴承载  
多少柔情泪？！  
千千万万……

杜若鸿  
著

——  
港大诗影



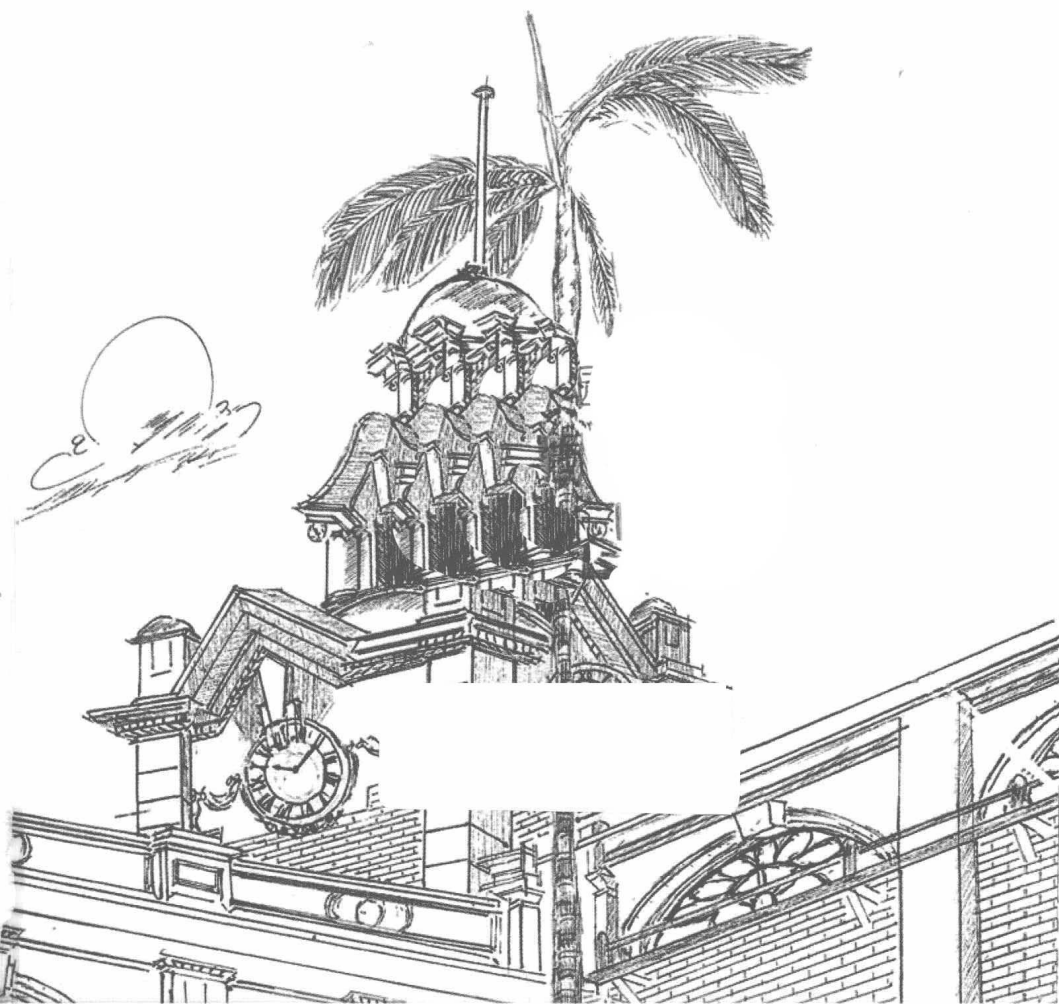
ZHEJIANG UNIVERSITY PRESS

浙江大学出版社

# 许我一个奇迹

—— 港大诗影

杜若鸿 著



ZHEJIANG UNIVERSITY PRESS

浙江大学出版社

## 图书在版编目(CIP)数据

许我一个奇迹——港大诗影 / 杜若鸿著. — 杭州 : 浙江大学出版社, 2012.1  
ISBN 978-7-308-09571-6

I. ①许… II. ①杜… III. ①诗集—中国—当代 IV. ①I227

中国版本图书馆CIP数据核字(2012)第009641号

## 许我一个奇迹——港大诗影

杜若鸿 著

---

责任编辑 宋旭华  
装帧设计 李颖雷  
编务助理 杜三鸿  
出版发行 浙江大学出版社  
(杭州市天目山路148号 邮政编码310007)  
(网址: <http://www.zjupress.com>)

印 刷 杭州杭新印务有限公司  
开 本 880mm × 1230mm 1/32  
印 张 9.25  
彩 页 8  
字 数 125千字  
版 印 次 2012年1月第1版 2012年1月第1次印刷  
书 号 ISBN 978-7-308-09571-6  
定 价 38.00元

---

版权所有 翻印必究 印装差错 负责调换  
浙江大学出版社发行部邮购电话(0571) 88925591



## 在古今的坐标轴上 ——序《许我一个奇迹——港大诗影》

黄国彬

香港中文大学讲座教授

三年前，若鸿来信邀稿，请我为他主编的《文综》写点诗文。今年七月，他传来电邮，请我为他的新诗集《许我一个奇迹——港大诗影》写一篇短序。电邮附有一张照片，并略述与照片有关的前因后果：

十多年前，在母校皇仁书院第一次参加新诗比赛，那时由您颁奖，所附相中的左一即为晚生……

若鸿的母校也是我的母校。我一看照片中的学弟，心中不由自主地说：“的确是个皇仁仔。”皇仁同学的额头，没有“皇仁学生”四个字刻在上面，但是在皇仁同学的神态中，我往往看得出他们的一些共同特征。要详谈这些特征，得在文学杂志上另觅篇幅；不过看了若鸿在中学时期的照片，我在皇仁念书时班上友辈的样貌纷纷投映在记忆的银幕上。我离开了子午线多年，此刻正朝着崦嵫飞驰，当然没有资格与脚踏子午线的若鸿互称同侪；不过，无可否认，我们少年时期有相同的求学途径：在香港铜锣湾一所自由开放的中学度





过愉快的岁月。

少年时期结束，我和若鸿的求学轨迹仍然一致：都进了香港大学。港大像皇仁一样，也能让年轻的心灵如隼、如鹰，按上帝所赐的翼展自由飞翔。若鸿像我一样，有机会在皇仁、港大求知、成长，现在回顾，相信也像我一样，充满了感激之情。

若鸿的著作我未能全看。不过就他的《西湖之梦》而言，我有这样的感觉：他既是学者，也是诗人。《西湖之梦》由他来摄影、配诗，其中以他本人的作品所占的比例最高。——这也是理所当然：由西湖专家歌颂西湖，不是自然不过吗？

若鸿写西湖的诗，叫我感到意外的惊喜。为什么说“意外”呢？因为千百年来，写西湖的佳作极多，除了东坡的《饮湖上初晴后雨》，还有数之不尽的隽篇。后人要置喙，真是谈何容易！在近人、今人咏西湖的篇什中，能叫人眼前一亮的可说少而又少；若鸿咏西湖之诗，却不乏丽句清词：

秋光淡白之际，  
最宜登高临远。

（《登高》）



暮霭沉沉之际，  
禅心止水。  
撑一叶小舟，  
寻渡……  
寻渡……

（《漫渡》）

薄茶 闲情  
轻声笑语  
窗外

一湖烟雨      （《雅聚》）



松亭风动帘，  
故人何时归？      （《思念》）

微雾岚影中，  
亭亭岛影似软缎……      （《秋水》）

在上述作品中，读者不难看出，作者涵泳于中国古典文学多年，笔端自然而然散发着诗词的清芬。

《许我一个奇迹——港大诗影》是若鸿在诗国里新辟的疆土；将近三百首新诗，题材不一而足，抒情、写景、咏物、记游都有；所涉的地域则遍及香港、台北、杭州、上海、纽约……既是《西湖之梦》的延续，也是诗笔在新领域的探索。在这些作品中，作者可以寄情于物：

真心和无情  
交给水珠衡量  
——在残荷上……      （《窗外》）

也可以融情于景：

我如今已懂得  
让雨丝独自牵系……      （《雨丝》）

可以思驰奥玄：

来！来一回大喜！



来！来一回大悲！  
然后  
来一回大寂  
和天地  
和日月……（《顿悟》）

也可以悟道归真：

有一天  
你必然会明白  
混乱只是过程  
最终总要归于井然  
而尽处  
在不尽处……  
就似若鸿  
从哪里来？！  
又将从哪里去？！（《终道》）

对于若鸿，新诗和古典诗词是不同的挑战。在大学钻研古典文学多年，他已经有极佳的装备。在《许我一个奇迹——港大诗影》之后，相信他必能在古今的坐标轴上，向更远、更美的目标驰行。

二〇一一年八月三十日

## 序诗

来吧 让若鸿的诗带你飞翔  
从港大的天空  
跨过千山万里  
踏出人生彩虹

来吧 让若鸿的诗带你飞翔  
从港大的天空  
越过荆棘满途  
抚平心间伤痛

飞吧 飞吧  
飞越南北 跨过西东  
把一切苦恼忘怀  
把幸福快乐迎送……



# 目 录

|                       |   |
|-----------------------|---|
| 序：在古今的坐标轴上 /<br>黄国彬教授 | 1 |
|-----------------------|---|

|    |   |
|----|---|
| 序诗 | 1 |
|----|---|

## 第一辑 风雨雾里人

|       |    |
|-------|----|
| 心影    | 2  |
| 星辰如痴  | 3  |
| 港大独逛  | 4  |
| 港大的夜空 | 5  |
| 千年情   | 6  |
| 诗绊    | 7  |
| 风雨雾里人 | 8  |
| 愁雨    | 9  |
| 春帷    | 10 |
| 清叩    | 11 |
| 天地无语  | 12 |
| 笔墨缘   | 13 |
| 铁汉歌   | 14 |
| 从君乐   | 15 |
| 残夜    | 16 |

|          |    |
|----------|----|
| 愁怀乱      | 17 |
| 锁清馨      | 18 |
| 三月偶成     | 19 |
| 若兮       | 20 |
| 水乡迷情     | 21 |
| 这一去      | 22 |
| 清思       | 23 |
| 幽芬时代     | 24 |
| 解梦       | 25 |
| 早绪       | 26 |
| 黯动       | 27 |
| 请你教晓我    | 28 |
| 绮罗香·红叶续寄 | 29 |
| 一萼红·梅思   | 30 |
| 梅花赋      | 31 |
| 觅绿荫      | 32 |
| 芳菲杂踏     | 33 |
| 赋绝       | 34 |

## 第二辑 纽约的雨

|       |    |
|-------|----|
| 相逢在何时 | 36 |
| 忘掉    | 37 |
| 西湖愁寄  | 38 |
| 悠悠千年梦 | 39 |
| 淡淡    | 40 |
| 忆湖    | 40 |
| 寻梦    | 41 |
| 梦痕    | 42 |
| 望湖    | 43 |
| 西湖之夜  | 43 |
| 那一年   | 44 |
| 梅柳咏   | 45 |



|                 |    |
|-----------------|----|
| 白雪 .....        | 45 |
| 采诗者 .....       | 46 |
| 湖中人 .....       | 47 |
| 芳华镌恋 .....      | 48 |
| 拂晓 .....        | 49 |
| 西湖之梦 .....      | 50 |
| 梦江南 .....       | 51 |
| 过份 .....        | 52 |
| 人在香江 .....      | 53 |
| 香江水 .....       | 54 |
| 水笼烟 .....       | 55 |
| 狂愁 .....        | 56 |
| 小雨花 .....       | 56 |
| 维港之夜 .....      | 57 |
| 夜市 .....        | 58 |
| 学缘 .....        | 59 |
| 机上即景 .....      | 60 |
| 香江雾 .....       | 61 |
| 香江印象 .....      | 62 |
| 羊城·白云山遇雨 .....  | 63 |
| 泰山之巅 .....      | 64 |
| 雨中歇书 .....      | 65 |
| 京城足迹 .....      | 66 |
| 起飞前 .....       | 67 |
| 台北的街道 .....     | 67 |
| 纽约的雨 .....      | 68 |
| 纽约踪迹 .....      | 69 |
| 故乡行·刺桐港拂晓 ..... | 70 |
| 美国博物馆行记 .....   | 71 |
| 再见纽约 .....      | 72 |
| 樱花咏 .....       | 73 |
| 樱花时节 .....      | 74 |

### 第三辑 一剪梅

|            |    |
|------------|----|
| 眷意 .....   | 76 |
| 彩绘 .....   | 76 |
| 黯竭 .....   | 77 |
| 情意结 .....  | 77 |
| 懵昧 .....   | 78 |
| 一剪梅 .....  | 79 |
| 赏雨 .....   | 79 |
| 变天 .....   | 80 |
| 爱 .....    | 81 |
| 才情 .....   | 81 |
| 寄东风 .....  | 82 |
| 燃烧 .....   | 83 |
| 我和你 .....  | 84 |
| 情囚 .....   | 85 |
| 理想 .....   | 86 |
| 独有 .....   | 87 |
| 曾经相爱 ..... | 88 |
| 诗心 .....   | 89 |
| 清愁 .....   | 90 |
| 诗迹 .....   | 91 |
| 余悸 .....   | 91 |
| 残梦 .....   | 92 |
| 池塘鱼 .....  | 93 |
| 雨梦 .....   | 94 |
| 约会 .....   | 95 |
| 漫漫 .....   | 96 |
| 乍起 .....   | 96 |
| 梦话 .....   | 97 |
| 入梦 .....   | 98 |



|       |     |      |     |
|-------|-----|------|-----|
| 茫茫天地间 | 99  | 隐入雨中 | 122 |
| 至美    | 100 | 雨丝   | 123 |
| 走在风雨中 | 101 | 多少年  | 124 |
| 绝忘    | 102 | 熬魂   | 125 |
| 痛·气   | 103 | 诺言   | 125 |
| 想雨    | 103 | 俊赏   | 126 |
| 何必    | 104 | 元宵情  | 126 |
| 混纯    | 105 | 风中讯  | 127 |
| 回忆    | 106 | 情深深  | 128 |
| 情极    | 107 | 化解   | 129 |
| 情弦    | 108 | 典藏   | 129 |
| 三度    | 108 | 深婉处  | 130 |
| 窗外    | 109 | 爱情对白 | 131 |
|       |     | 大爱   | 132 |
|       |     | 三度   | 132 |
|       |     | 怎地   | 133 |
|       |     | 红绿树  | 134 |
|       |     | 兑现   | 134 |
|       |     | 如果…… | 135 |
|       |     | 统战   | 136 |
|       |     | 同一天空 | 137 |
|       |     | 情渊   | 138 |
|       |     | 文学   | 139 |
|       |     | 悟    | 140 |
|       |     | 诗的日子 | 141 |
|       |     | 思古幽情 | 142 |
|       |     | 莫名   | 143 |
|       |     | 谁    | 143 |

#### 第四辑 莫名

|      |     |               |     |
|------|-----|---------------|-----|
| 夜雨深深 | 111 |               |     |
| 和风入绪 | 112 |               |     |
| 原色   | 113 |               |     |
| 泪中诗  | 114 |               |     |
| 重奏   | 114 |               |     |
| 清名   | 115 |               |     |
| 情字   | 115 |               |     |
| 长驻   | 116 |               |     |
| 归隐   | 116 |               |     |
| 孤怨   | 117 |               |     |
| 情恸   | 117 |               |     |
| 空·白  | 118 |               |     |
| 古典之音 | 119 |               |     |
| 寒风夜  | 120 |               |     |
| 引动   | 121 |               |     |
| 痛惜   | 121 |               |     |
|      |     | <b>第五辑 芬霏</b> |     |
|      |     | 芬霏            | 145 |
|      |     | 爱的世界          | 146 |



|              |     |
|--------------|-----|
| 嵩渊 .....     | 147 |
| 偏激与傲慢 .....  | 148 |
| 天风海雨 .....   | 149 |
| 柔·郁 .....    | 150 |
| 闲雅 .....     | 151 |
| 圆动 .....     | 152 |
| 谓生死 .....    | 152 |
| 问愁 .....     | 153 |
| 研赏 .....     | 154 |
| 六月雨 .....    | 155 |
| 顿悟 .....     | 156 |
| 播音人 .....    | 156 |
| 独创吃语 .....   | 157 |
| 留题 .....     | 158 |
| 学涯回首 .....   | 159 |
| 短讯 .....     | 160 |
| 诗艺观 .....    | 161 |
| 诗丛 .....     | 162 |
| 半岛酒店聚记 ..... | 163 |
| 战争 .....     | 164 |
| 骤换 .....     | 165 |
| 郊外采风 .....   | 166 |
| 酝酿 .....     | 167 |
| 忘情弃爱 .....   | 167 |
| 挑战 .....     | 168 |
| 诗化哲学 .....   | 169 |
| 诗人的心迹 .....  | 169 |
| 爱诗者 .....    | 170 |
| 后话 .....     | 170 |
| 逃 .....      | 171 |
| 诗作偶拾 .....   | 171 |

## 第六辑 星辉

|           |     |
|-----------|-----|
| 天地心 ..... | 173 |
| 对吟 .....  | 174 |
| 对凝 .....  | 175 |
| 终道 .....  | 176 |
| 前定 .....  | 177 |
| 诗之位 ..... | 177 |
| 诗之曲 ..... | 178 |
| 英雄气 ..... | 179 |
| 文武志 ..... | 180 |
| 并肩战 ..... | 181 |
| 炯炯 .....  | 182 |
| 斯为 .....  | 183 |
| 攻防战 ..... | 184 |
| 忆故人 ..... | 185 |
| 尽头 .....  | 186 |
| 究理 .....  | 187 |
| 歇力感 ..... | 187 |
| 古琴颂 ..... | 188 |
| 无常观 ..... | 189 |
| 极乐 .....  | 190 |
| 活梦 .....  | 191 |
| 诗之界 ..... | 192 |
| 诗家 .....  | 193 |
| 惊魂 .....  | 193 |
| 刹那 .....  | 194 |
| 独行 .....  | 195 |
| 淡然 .....  | 196 |
| 星海 .....  | 197 |
| 星辉 .....  | 198 |
| 月儿说 ..... | 199 |



|        |     |
|--------|-----|
| 泪      | 200 |
| 滚滚红尘话  | 201 |
| 请告诉我 … | 202 |
| 歌者无疆   | 203 |
| 网游     | 204 |
| 绰约·抑·动 | 205 |

|        |     |
|--------|-----|
| 纵横气    | 230 |
| 孔子塑像   | 231 |
| 中华礼赞   | 233 |
| 华夏踏歌五韵 | 234 |

## 第八辑 诗运

### 第七辑 华夏踏歌

|           |      |     |
|-----------|------|-----|
| 千古同哭      | 追忆四川 |     |
| 大地震近三周年   |      | 208 |
| 震感        |      | 209 |
| 震殇        |      | 210 |
| 白·黑与红     | 2008 |     |
| 断想        |      | 211 |
| 天灾偶感      |      | 212 |
| 凝聚力       |      | 213 |
| 伤悼        |      | 214 |
| 毁灭颂       |      | 215 |
| 生命洪荒      |      | 216 |
| 灭种之灾      |      | 217 |
| 水灾记忆      |      | 218 |
| 八载中华情     |      | 219 |
| 2008 首都情怀 |      | 220 |
| 金牌题记      |      | 221 |
| 书寄拳王      |      | 222 |
| 祝福中国      |      | 223 |
| 和平共处      |      | 224 |
| 百年梦       |      | 225 |
| 书奥运后      |      | 227 |
| 同一个世界     |      | 228 |
| 五四早忆      |      | 229 |

|           |     |
|-----------|-----|
| 诗运        | 236 |
| 纵读诗书      | 237 |
| 续《洛神赋》    | 238 |
| 读碧山词      | 239 |
| 鬼才遇中仙     | 240 |
| “印象”批判    | 241 |
| 夜读诗选      | 242 |
| 耆卿词詮感     | 243 |
| 诗忆志摩      | 244 |
| 读愁予诗      | 245 |
| 读若芬书简     | 245 |
| 再读《红豆书简》  | 246 |
| 文综        | 247 |
| 读国彬诗      | 247 |
| 研诗偶感      | 248 |
| 《承传》与《撷英》 | 249 |
| 若鸿于飞      | 249 |
| 续若鸿的诗     | 250 |
| 经典重塑      | 251 |
| 读史伤感      | 251 |
| 读鼎堂诗      | 252 |
| 天仙配观感     | 253 |
| 观印度电影偶感   | 254 |
| 读传奇偶感     | 255 |
| 研创咏怀      | 256 |



|          |     |
|----------|-----|
| 诗跋 ..... | 257 |
|----------|-----|

## 附录一：古典诗词

|                |     |
|----------------|-----|
| 绝诗二首·夜相思 ..... | 258 |
| 五古·清愁 .....    | 259 |
| 七古·三月 .....    | 259 |
| 七古·妙约 .....    | 260 |
| 七古·对唱 .....    | 261 |
| 七古·缘份 .....    | 262 |
| 对联 .....       | 263 |
| 相见欢 .....      | 264 |
| 醉花阴·忆人 .....   | 264 |
| 浪淘沙 .....      | 264 |

## 附录二：乐谱

|             |     |
|-------------|-----|
| 某 .....     | 265 |
| 残夜 .....    | 268 |
| 情困江南 .....  | 270 |
| 再别西湖 .....  | 272 |
| 相逢在何时 ..... | 274 |

写在编后：

|                |     |
|----------------|-----|
| 港大天空下的彩翼 ..... | 277 |
|----------------|-----|



## 第一辑 风雨雾里人

---



## 心影

小窗前  
灯光熹微  
唯有独影  
陪着夜深  
待月……

星空下  
未许是心静  
抑或是  
夜的尘埃  
早已落定？！

在星月的摇篮中  
我成了  
无知的宠儿  
悄悄 融入夜的静谧……

## 星辰如痴

港大的天空下  
淡淡星辰如痴  
有你的依偎  
还有月色

寒暄的岁月  
有你那一句 我从此  
再不愚昧

感谢这痴心的碰撞  
叫我谙懂  
还有这红颜知己  
共度风雨